Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com

BA - I (HONS)

Paper - II

Unit - 3

Topic :⇒ Descartes: Method of Doubt.

(देकार्त: सन्देह की विधि)

देकार्त से पूर्व का दर्शन अन्धविश्वास एवं रूढ़िगत परम्पराओं से ग्रसित था। दर्शन पर धर्म का आधिपत्य था। दर्शन स्वतंत्र चिंतन का विषय वस्तु नहीं था। उस समय की मूल समस्या दर्शन के क्षेत्र में निर्विवाद एवं निःसन्देह सत्य की प्राप्ति करना था। इसी कारण देकार्त ने अपने दर्शन का प्रारंभ संदेह से किया। वे अपने से पूर्व सभी दार्शनिक विचारों पर संदेह किया। वे स्पष्टता एवं विवेकपूर्णता की कसौटियों पर इन विचारों को कसने का प्रयास किया। जो ज्ञान स्पष्ट एवं विवेकपूर्ण है उसी को प्रामाणिक ज्ञान माना। देकार्त सन्देह को ही सत्य ज्ञान की प्राप्ति का साधन एवं मार्ग माना।

देकार्त का मानना है कि हमें जो भी ज्ञान प्राप्त होता है, वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन्द्रियों के माध्यम से ही प्राप्त होता है। हमारी इन्द्रियाँ भी कभी कभी धोखा देती हैं। जैसे- संध्या के समय में कभी कभी हमारी इन्द्रियाँ रस्सी को साँप समझ लेती हैं। इससे स्पष्ट है कि जिससे एक बार धोखा हो गया उससे बार-बार धोखा हो सकता है। अतः बिना परीक्षण किये उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। इस प्रकार इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर भी संशय किया जा सकता है। स्वप्न में भी जो कुछ हमें प्रतीत होता है वह वास्तविक जान पड़ता है।

Scanned with CamScanner

किन्तु यथार्थ जीवन में वह भ्रामक सिद्ध होता है। इस प्रकार से वर्तमान में हम जो कुछ भी देखते हैं, उस पर संशय किया जा सकता है। देकार्त का मानना है कि ऐसा कोई प्रत्यय नहीं है जो निश्चित और स्पष्ट प्रतीत होता है। अतः वे संसार के सभी वस्तुओं को दोषपूर्ण मानते हैं। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देकार्त शरीर, संसार, आन्तरिक और बाह्य सभी वस्तुओं पर संदेह करते हैं। वे सन्देह के माध्यम से ही निःसन्देह सत्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। संशय ही ज्ञान का स्रोत है यही देकार्त की सन्देह विधि है। देकार्त ने सत्य की प्राप्ति के लिए सन्देह पद्धति को अपनाया इसलिए उनकी पद्धति को सन्देह विधि कहते हैं। देकार्त के अनुसार सत्य साध्य है संदेह साधन है।

देकार्त ने अपने चिंतन को सामाजिक परम्पराओं, लोकमत, कुशिक्षा एवं पूर्वाग्रहों से मुक्त करने के लिए प्रत्येक वस्तु पर संशय किया। उनके संशय के मूल में बुद्धि को पूर्वाग्रहों से मुक्त करके सत्य एवं प्रामाणिक ज्ञान के अनुकूल बनाना है। देकार्त की सन्देह पद्धती संशयवाद की ओर नहीं ले जाता है। उनका प्रयोग वैध ज्ञान की प्राप्ति हेतु एक साधन के रूप में किया गया है। अतः देकार्त के अनुसार ज्ञान का उद्गम संदेह है। युरोपिय दर्शन के इतिहास में देकार्त प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने संदेह की कसौटी पर सत्य की परीक्षा प्रारंभ की। इसी कारण देकार्त को आधुनिक संदेह प्रणाली का पिता कहा जाता है।

देकार्त ने सत्य की प्राप्ति हेतु सभी परंपरागत मान्यताओं पर संदेह किया। सभी पूर्वअवधारणाओं एवं वस्तुओं के परीक्षण हेतु अपनी प्रस्तुत दार्शनिक पद्धति के विमर्श में चार प्रमुख नियम बताये जो निम्नलिखित है।

(i) प्रथम नियम के अनुसार :- किसी चीज को तब तक सत्य नहीं मानना चाहिए जब तक उसका प्रामाणिक ज्ञान न हो जाये। स्पष्टता एवं विवेकपूर्णता किसी भी बात की वैधता की कसौटिया है।

(ii) द्वितीय नियम के अनुसार :- इसके अनुसार हमें जिस जटिल समस्या पर विचार करना है। उसका विश्लेषण करना चाहिए जब तक की सरल अंश प्राप्त न हो जाये, जब समस्या का सरल अंश प्राप्त हो जाता है तो वह समस्या अविश्लेष्य हो जाता है। इस प्रकार विश्लेषण का अर्थ समस्या के मूल तत्वों की जानकारी प्राप्त करना है।

(iii) तृतीय नियम के अनुसार :- विचारणीय समस्या के स्वरूप पर व्यवस्थित ढंग से विचार किया जाता है। यह नियम एक प्रकार का संश्लेषण है। इसमें हम सरलता से कठिनता के बढ़ते क्रम में विश्लेष्य समस्या को प्रस्तुत करते है। इसका उद्देश्य अव्यवस्थित समस्या के स्वरूप को व्यवस्थित करना है। इसके अन्तर्गत समस्या के मूल तत्वों को व्यवस्थित रखकर उसके आधार पर निगमित होने वाले निष्कर्षों को संगठित किया जाता है। इससे हमारे विचारों में क्रमबद्धता आती है।

(iv) चतुर्थ नियम :⇒ यह उपरोक्त नियमों का सर्वेक्षण परीक्षण और मूल्यांकन है। इसके अन्तर्गत अपने द्वारा किये गये आकलन (गणना) का आलोचनात्मक निरीक्षण किया जाता है। ताकि विश्लेषण एवं संश्लेषण की प्रक्रिया, अर्थात विचार श्रृंखला में कोई गड़बड़ी ना हो। इस प्रकार से चतुर्थ नियम का लक्ष्य विचार प्रक्रिया को निर्दोष बनाना है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देकार्त ने सत्य ज्ञान की प्राप्ति हेतु संदेह को साधन माना। सभी पौराणिक अन्धविश्वासों पूर्वाग्रहों एवं वस्तुओं पर संदेह किया। उपरोक्त चारों नियम के आधार पर परीक्षण के उपरांत ही ज्ञान को सत्य माना। इस प्रकार देकार्त ने सर्वप्रथम अपने संदेह पद्धति के आधार पर व्यवस्थित ढंग से वास्तविक ज्ञान प्राप्ति हेतु एक प्रारूप तैयार किया इसी कारण देकार्त को आधुनिक संदेह पद्धति का जनक माना जाता है। देकार्त के दर्शन में संदेह साधन है जिसके आधार पर साध्य सत्य तक पहुंचा जाता है, वहीं ह्यूम के दर्शन में संदेह साधन एवं साध्य दोनों है। इसी कारण देकार्त पूर्णतः संदेहवादी नहीं है वहीं ह्यूम पूर्ण संदेहवादी है।